03

नियोजित विकास की राजनीति

सीखने के प्रतिफल

इस अध्याय में विद्यार्थी भारत की नियोजन नीति तथा पंचवर्षीय योजनाओं को समझ सकेंगे।

परिचय-

आजादी के बाद के पहले दशक में इस सवाल पर खूब बहसें हुई, कि भारत में विकास का पैमाना कैसा हो? इस समय हिंदुस्तान के सामने विकास के दो मॉडल थे। पहला उदारवादी पूंजीवादी मॉडल था, जो यूरोप तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में अपनाया गया था। दूसरा समाजवादी मॉडल था, जिसे सोवियत संघ ने अपनाया था। भारतीय नेताओं की राय इस मुद्दे पर बँटी हुई थी। कुछ लोग पूंजीवाद के पक्षधर थे, जबकि कुछ लोग समाजवाद के पक्षधर थे।

मतभेदों के बावजूद एक बिंदु पर सभी सहमत थे, कि भारत में नियोजित विकास की नीति को अपनाया जाए। इस प्रकार भारत में योजना आयोग का गठन हुआ।

योजना आयोग

- 1944 ईस्वी में उद्योगपतियों के एक समूह ने एक संयुक्त प्रस्ताव तैयार किया, जिसे बाम्बे प्लान कहा जाता है। इसी प्लान के आधार पर भारत में योजना आयोग अस्तित्व में आया तथा प्रधानमंत्री इसके अध्यक्ष बने। भारत अपने विकास के लिए कौन- सा रास्ता अपनाएगा- यह फैसला करने में इस संस्था ने केंद्रीय और सबसे प्रभावशाली भूमिका निभाई।
- केंद्र सरकार और सभी राज्य सरकारों के बजट को दो हिस्सों में बाँटा गया ।एक हिस्सा गैर योजना व्यय का था, जिसके अंतर्गत सालाना आधार पर दैनंदिन मदों पर खर्च करना था, जबकि दूसरे हिस्से में तय की गई प्राथमिकताओं के आधार पर 5 साल की अवधि में खर्च करना था। इसके लिए 1951 ईस्वी में पंचवर्षीय योजना का प्रारूप जारी किया गया।

प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-1956)

- पहली पंचवर्षीय योजना हैरोड- डोमार नामक अर्थशास्त्रियों के मॉडल पर आधारित था।

© JCERT not to be republished

- पहली पंचवर्षीय योजना में कृषि के विकास पर ज्यादा जोर दिया गया तथा योजना के अंतर्गत बाँध और सिंचाई के क्षेत्र में निवेश किया गया। भाखड़ा नांगल, हीराकुंड और दामोदर घाटी बाँध जैसी विशाल परिजनों के लिए बड़ी धनराशि आवंटित की गई।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956-1961)

- द्वितीय पंचवर्षीय योजना भारतीय अर्थशास्त्री महालनोबिस द्वारा विकसित किया गया था । अतः इसे महालनोबिस मॉडल भी कहा जाता है।

- इस योजना में भारी उद्योगों के विकास पर जोर दिया गया। सरकार ने निजी तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों को आगे बढ़ने में मदद किया। इसके लिए बिजली, रेलवे, ईस्पात, मशीनरी और संचार जैसे उद्योगों के विकास पर बल दिया गया।

इसी योजना के अंतर्गत भिलाई, दुर्गापुर तथा राउरकेला में स्टील संयंत्रों की स्थापना की गई।

1. **विवाद/आलोचना-** प्रारंभिक दौर में इस नीति पर विवाद भी हुआ। आलोचकों ने विकास की इस नीति पर कई सवाल भी उठाए।

2. **कृषि बनाम उद्योग-**कुछ लोगों का मानना था कि दूसरी पंचवर्षीय योजना में कृषि के विकास पर ध्यान नहीं दिया गया, जबकि उद्योगों पर जोर देने के कारण खेती और ग्रामीण इलाकों को चोट पहुंची। कुछ अन्य लोगों का मानना था कि यदि सरकार कृषि पर ज्यादा धनराशि खर्च करती भी है तो ग्रामीण गरीबी की समस्या का समाधान नहीं हो पाएगा।

3. **निजी क्षेत्र बनाम सार्वजनिक क्षेत्र-** आलोचकों का कहना था कि योजनाकारों ने निजी क्षेत्र को पर्याप्त स्थान नहीं दिया और लाइसेंस तथा परमिट की प्रणाली खड़ी करके निजी पूंजी की राह में रोड़े अटकाए गए, जबकि सार्वजनिक क्षेत्र में विशाल उद्योग स्थापित किए गए।

नियोजित विकास का परिणाम

बुनियाद:- इसी दौर में भारत के आगामी आर्थिक विकास की बुनियाद रखी गई। बड़ी-बड़ी विकास परियोजनाएं इसी अवधि में शुरू की गई। सार्वजनिक क्षेत्र के कुछ भारी उद्योग जैसे ईस्पात, तेल शोधक कारखाने, विनिर्माण इकाइयां, रक्षा उत्पादन आदि इसी अवधि में शुरू हुई। इसी दौर में परिवहन तथा संचार के आधारभूत ढांचे भी स्थापित किए गए।

भूमि-सुधार:- इसी अवधि में भूमि सुधार के गंभीर प्रयास किए गए तथा जमींदारी प्रथा को समाप्त कर दिया गया। जमीन के छोटे-छोटे टुकड़ों को एक साथ करने के प्रयास किए गए, ताकि खेती का काम सुविधाजनक हो सके।

हरित क्रांति:- सरकार ने खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए कृषि की एक नई रणनीति अपनाई तथा किसानों को उच्च गुणवत्ता के बीज, उर्वरक, कीटनाशक और बेहतर सिंचाई सुविधा मुहैया कराया। सरकार ने उचित मूल्य पर किसानों के ऊपज को खरीदना शुरू किया ।यही परिघटना हरित क्रांति कहलाती है। हरित क्रांति से देश में खाद्यान्न की उपलब्धता बढ़ी तथा खाद्यान्न की संकट दूर हुई।

© JCERT not to be republished

बदलाव:- 1960 के दशक के अंत में देश की आर्थिक विकास में एक नया मोड़ आया तथा इंदिरा गांधी के नेतृत्व में अर्थव्यवस्था पर राज्य के नियंत्रण तथा निर्देशन को बढ़ाया गया। निजी क्षेत्र के उद्योगों पर बाधाएं स्थापित की गई तथा 14 निजी बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया।

1 जनवरी 2015 को भारत सरकार ने योजना आयोग के स्थान पर नीति आयोग नामक एक नए संस्थान का गठन किया तथा इसके कार्य एवं उद्देश्य का विस्तार किया गया।

निष्कर्ष- आजादी के बाद अपनाई गई विकास की नियोजित नीति ने देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। देश में खाद्यान्न की संकट दूर हुई तथा देश में हरित क्रांति आया।

© JCERT not to be republished

अभ्यास के प्रश्न
बहुविकल्पीय प्रश्न-

1. प्रथम पंचवर्षीय योजना का कार्यकाल क्या था?

   a. 1951-1956

   b. 1961-1966

   c. 1980-1985

   d. 1970-1975

2. योजना आयोग के अध्यक्ष कौन होते थे?

   a. मुख्यमंत्री b. प्रधानमंत्री

   c. राष्ट्रपति d. राज्यपाल

3. 1956-1962 किस पंचवर्षीय योजना का कार्यकाल था?

   a. प्रथम b. द्वितीय

   c. तृतीय d. पंचम

4. भाखड़ा नांगल बांध का निर्माण किस पंचवर्षीय योजना में हुआ?

   a. द्वितीय

   b. चतुर्थ

   c. प्रथम

   d. इनमें से कोई नहीं

5. 14 निजी बैंकों का राष्ट्रीयकरण किस प्रधानमंत्री ने किया था?

   a. मनमोहन सिंह

   b. इंदिरा गांधी

   c. नरेंद्र मोदी

   d. इनमें से कोई नहीं

लघु उत्तरीय प्रश्न-

6. पहली पंचवर्षीय योजना किस मॉडल पर आधारित था?

7. द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत स्थापित किए गए स्टील संयंत्रों के नाम लिखें।

8. बॉम्बे प्लान से आप क्या समझते हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

9. योजना आयोग का गठन कब तथा कैसे हुआ? प्रथम तथा द्वितीय पंचवर्षीय योजना का वर्णन करें।

10. भारत में नियोजित विकास की नीति अपनाने के क्या परिणाम हुए?

© JCERT not to be republished

04

भारत का विदेश संबंध

सीखने के प्रतिफल

इस अध्याय से बच्चें भारत द्वारा अपनाए गए विदेश नीति के बारे में सीखेंगे।

परिचय

इस अध्याय मे हम विदेश नीति के सिद्धांत; अन्य राष्ट्रों के साथ भारत के बदलते संबंध: अमेरिका, रूस, चीन, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि।

भारत के अपने पड़ोसियों के साथ संबंध- पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका और म्यांमार तथा भारत का परमाणु कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानेंगे।

भारत की विदेश नीति

- जब एक देश विभिन्न देशों, अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों, अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों तथा आन्दोलनों व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति जिन नीतियों को अपनाता है,उन नीतियों को सामूहिक रूप से विदेश नीति कहा जाता है
- भारत की विदेश नीति पर देश के पहले प्रधानमंत्री एवं विदेश मंत्री पं जवाहर लाल नेहरू की अमिट छाप है।
- नेहरू जी की विदेश नीति के तीन मुख्य उद्देश्य थे :
  1. संघर्ष से प्राप्त सम्प्रभुता को बचाए रखना ।
  2. क्षेत्रीय अखंडता को बनाए रखना ।
  3. तेज गति से आर्थिक विकास करना ।
- भारत की विदेश नीति के मुख्य सिद्धान्त :-
  1. गुटनिरपेक्षता
  2. निःशस्त्रीकरण
  3. वसुधैव कुटुम्बकम
  4. अंतर्राष्ट्रीय मामलों में स्वतंत्रतापूर्वक एवं सक्रिय भागीदारी

© JCERT not to be republished